INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VII- 2nd Lang	Department: Hindi	Class work
Lesson-9 हिमालय की बेटियाँ	Topic: - प्रश्नोत्तर और व्याकरण	Note: Pl write in your NB

अति लघु प्रश्न-

प्रश्न 1. निबंध में किन दो नदियों की विशेषताएँ बताई गई हैं?

उत्तर- सिंधु और ब्रह्मपुत्र नदियों की विशेषताएँ निबंध में बताई गई हैं।

प्रश्न 2. निबंध 'हिमालय की बेटियाँ' के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर- निबंध 'हिमालय की बेटियाँ' के लेखक का नाम 'नागार्जुन' है।

प्रश्न 3. किसने नदियों को लोकमाता कहा है?

उत्तर- काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता कहा है।

प्रश्न 4. लेखक के मन में नदियों के प्रति कैसे भाव थे**?**

उत्तर- लेखक के मन में नदियों के प्रति आदर और श्रद्धा के भाव थे।

प्रश्न 5. हिमालय की बेटियाँ कैसी हैं?

उत्तर- हिमालय की बेटियाँ चंचल और शरारती हैं|

प्रश्न 6. निबंध में महाकवि कालिदास की किस कृति का उल्लेख हुआ है?

उत्तर- निबंध में महाकवि कालिदास की मेघदूत कृति का उल्लेख हुआ है|

प्रश्न 7. लेखक 'नागार्जुन' ने किस नदी को बहन की संज्ञा दी है?

उत्तर- लेखक 'नागार्जुन' ने सतलुज नदी को बहन की संज्ञा दी है|

लघु प्रश्न-उत्तर

प्रश्न-1. लेखक समुद्र को सौभाग्यशाली क्यों मानता है?

उत्तर– लेखक समुद्र को सौभाग्यशाली मानता है क्योंकि उसे पर्वत राज हिमालय की दो बेटियों के हाथ पकड़ने का श्रेय मिला है। सिंधु और ब्रह्मपुत्र इन दो महान नदियों का कल्याण करने के कारण समुद्र भाग्यशाली है।

प्रश्न-2. पाठ के लेखक को नदियों में किसके रूप प्रतीत होते हैं?

उत्तर: पाठ के लेखक को नदियों में कभी माँ का, कभी बेटी का, कभी प्रेमिका का और कभी बहन का रूप दिखाई देता है। इस तरह लेखक को नदियों में स्त्री के सभी रूप प्रतीत होते हैं।

प्रश्न-3. लेखक नदियों को हिमालय की बेटियाँ क्यों कहते हैं?

उत्तर: नदियाँ हिमालय से निकलती हैं इसलिए वह नदियों को हिमालय की बेटियों की तरह देखता है। नदियाँ हिमालय की गोद में खेलती हुई नज़र आती हैं इसलिए लेखक उनको हिमालय की बेटियाँ कहते हैं।

प्रश्न-4 लेखक को नदियों की कौन-सी बात हैरान करती है?

उत्तर: जब नदियाँ हिमालय से निकलकर समतल मैदानों में आ जाती हैं तो वे विशाल रूप धारण कर लेती हैं जब लेखक हिमालय के कंधे पर चढ़कर यह दृश्य देखता है तो उसे हैरानी का अनुभव होता है।

दीर्घ प्रश्न-उत्तर

प्रश्न-1. काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है?

उत्तर- काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता इसलिए कहा है क्योंकि वे धरती के प्राणियों की रक्षा और उनका लालन-पालन एक माँ की तरह करती हैं। प्यासी धरती जब पानी पीती है तो उसमें से उगी फसलें किसानों को प्रसन्न करती हैं और लोगों की भूख मिटाती हैं।

प्रश्न-2. हिमालय की यात्रा में लेखक ने किन-किन की प्रशंसा की है?

उत्तर- हिमालय की यात्रा में लेखक ने हिमालय की अनुपम छटा की, हिमालय से निकले वाली नदियों की, बर्फ से ढकी पहाड़ियों की सुंदरता की, हरी–भरी घाटियों की, देवदार, चीड़, चिनार, सफैदा, आदि से भरे जंगलों की तथा महासागरों की प्रशंसा की है।

प्रश्न-3. हमारे जीवन में नदियों का क्या महत्व है?

उत्तर: नदियों के बिना धरती पर जीवन संभव ही नहीं है क्योंकि नदियाँ ही हमें पीने से लेकर नहाने तक के दैनिक कार्य के लिए पानी देती हैं और धरती को उपजाऊ

बनाती हैं। मनुष्य ही नहीं जीव-जंतु और पेड़-पौधे सब नदियों पर ही निर्भर करते हैं। नदियों पर बाँध बना कर बिजली भी पैदा की जाती है| नदियाँ हमारे आवागमन का साधन भी हैं।

व्याकरण भाग-

प्रश्न-1. निम्नलिखित मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए|

1. नीले नभ की सीमा तक पहुँचना– (बहुत ऊँचाई पर उड़ना)
वाक्य – पंछी नीले नभ की सीमा तक पहुँचने की कोशिश में लगे रहते हैं|

2. साँसों की डोरी तनना– (अंतिम समय)
वाक्य – पंछियों की क्षितिज तक जाते-जाते साँसों की डोरी तन जाती है।

3. दूध-घी की नदियाँ बहना- (समृद्ध होना)
वाक्य – श्रीकृष्ण के युग में हमारे देश में दूध-घी की नदियाँ बहती थीं।

4. ऐंठा हुआ– (अकड़ना)
वाक्य – सबको अनसुना करके राम ऐंठा हुआ चला जा रहा था।

5. दबे पाँव भागना– (चुपचाप चले जाना)
वाक्य – पिताजी को गुस्से में देख कर मैं वहाँ से दबे पाँव भाग गया।

6. दबदबा होना– (प्रभाव शाली होना)
वाक्य – मेरे पिता जी का शहर में बहुत दबदबा है।

7. फिसड्डी होना– (पीछे रहना)
वाक्य – पढ़ने-लिखने में धनराज फिसड्डी ही रह गया है।

8. नौ-दो ग्यारह होना– (भाग जाना)
वाक्य – चोर पुलिस को देखते ही नो दो ग्यारह होना गया।

9. लोहा लेना– (साहस पूर्वक मुकाबला करना)
वाक्य – रानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेजों से बढ़-चढ़ कर लोहा लिया था।

10. चैन न आना– (आराम नहीं मिलना)
वाक्य – जब तक मेरा काम ख़त्म नहीं हो जाता तब तक मुझे चैन नहीं मिलता।

11. चौकन्ना होना– (सजग होना)
वाक्य – मैं छत पर चौकन्नी होकर वह चारों देख रही थी।

12. पीठ थपथपाना– (शाबाशी देना)
वाक्य- कक्षा में प्रथम आने पर पिताजी ने मेरी पीठ थपथपाई|

प्रश्न 2- दिए गए शब्दों के पर्यायवाची लिखिए|

1. आकुल - उतावला , बेहाल , आतुर
2. संभ्रांत- सम्मानित , प्रतिष्ठित , कुलीन
3. माथा - भाल , सिर , मस्तक
4. नग - पहाड़ , गिरि , पर्वत
5. प्रतिस्पर्धा - होड़ , प्रतियोगिता , मुकाबला
6. अठखेली - हँसी-मज़ाक , कौतुक , उछल-कूद
7. विराट - विस्तृत , विशाल , विकराल
8. संपूर्ण - समूचा , तमाम , समस्त
9. दीवाली - दीपावली , दीपोत्सव , दीपमाला
10. हिमालय - हिमाचल , गिरिराज , पर्वतराज
11. श्रृंखला - श्रेणी , क्रम , कतार
12. विकराल - भयानक , भीषण , डरावना

वर्ण विच्छेद-

नोट- किसी भी भाषा में प्रयुक्त होने वाली मूल ध्वनि को वर्ण कहते हैं। जैसे – अ ,क्, ख् आदि। इन वर्णों को अलग-अलग करने की प्रक्रिया को वर्ण विच्छेद कहते हैं।

प्रश्न-3 दिए गए शब्दों के वर्ण विच्छेद कीजिए।

1. अनार = अ + न् + आ + र् + अ

2- विद्यालय = व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ

3- दीवार = द् + ई + व् + आ + र् + अ

4- कहानी = क् + अ + ह् + आ + न् + ई

5- अनुमान = अ + न् + उ + म् + आ + न् + अ

6- झूला = झ् + ऊ + ल् + आ

7- अमृत = अ + म् + ऋ + त् + अ

8- बेकार = ब् + ए + क् + आ + र् + अ

9- तैयार = त् + ऐ + य् + आ + र् + अ

10- कोयला = क् + ओ + य् + अ +ल् + आ

11- सौभाग्य = स् + औ + भ् + आ + ग् + य् + अ

12- क्षमा = क् + ष् + अ + म् + आ

13- चित्र = च् + इ + त् + र् + अ

14- यज्ञ = य् + अ + ज् + ञ् + अ

15- श्रोता = श् + र् + ओ + त् + आ

16- भंडार = भ् + अं + ड् + आ + र् + अ

17- निबंध = न् + इ + ब् + अं + ध् + अ

18- बचपन = ब् + अ + च् + अ + प् + अ + न् + अ

19- चाँद = च् + आँ + द् + अ

20- बीमारी = ब् + ई + म् + आ + र् + ई

प्रश्न-4 अनुच्छेद - दीपावली

दीपावली दीपों का त्योहार है। इसे दीवाली या दीपावली भी कहते हैं। भारतीयों का विश्वास है कि सत्य की सदा जीत होती है झूठ का नाश होता है। दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है। भारतवर्ष में मनाए जाने वाले सभी त्यौहारों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टियों से अत्यधिक महत्व है।

इसे दीपोत्सव भी कहते हैं। **'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात्** 'अंधेरे से प्रकाश की ओर' यह उपनिषद-वाक्य है। माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्री रामचंद्र अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात लौटे थे। श्री राम के स्वागत में अयोध्या वासियों ने घी के दीए जलाए थे। कार्तिक मास की अमावस्या दीयों से जगमगा उठी। तब से आज तक भारतीय प्रति वर्ष यह प्रकाश-पर्व हर्ष व उल्लास से मनाते हैं। यह पर्व अधिकतर अक्तूबर या नवंबर के महीने में पड़ता हैं। लोगों में दीवाली की बहुत उमंग होती है। लोग अपने घरों का कोना-कोना साफ करते हैं, नये कपड़े पहनते है। मिठाइयाँ बाँटते हैं| घर-घर में सुन्दर रंगोली बनाई जाती है, दिये जलाए जाते हैं और आतिशबाजी की जाती है बड़े छोटे सभी इस त्योहार में भाग लेते हैं। अंधकार पर प्रकाश की विजय का यह पर्व समाज में उल्लास, भाई-चारे व प्रेम का संदेश फैलाता है। हर प्रांत या क्षेत्र में दीवाली मनाने के कारण एवं तरीके अलग हैं पर सभी जगह कई पीढ़ियों से यह त्योहार चला आ रहा है। लोग एक-दूसरे को दीवाली की शुभकामनाएँ देते हुए त्यौहार का आनन्द लेते हैं|

खुश रहिए! स्वस्थ रहिए! मुस्कराते रहिए!